मोहाली। 'मूल्यनिष्ठ शिक्षा अभियान' के अंतर्गत आयोजित कार्यक्रम में पंजाब के शिक्षामंत्री डॉ. दलजीत सिंह चीमा को ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए ब्र.कु. प्रेमलता।

संगम भवन-आबू रोड। श्रीकृष्ण जन्माष्टमी पर आयोजित चैतन्य झाँकी का उद्घाटन करते हुए नगरपालिका अध्यक्ष सुरेश सिंदल, ब्र.कु. भरत, ब्र.कु. बिलास व ब्र.कु. देवु।

झखनी-उधमपुर। सी.आर.पी.एफ. के 137वीं बटालियन में दो दिवसीय राजयोग मेडिटेशन कैम्प के दौरान सम्बोधित करते हुए ब्र.कु. डॉ.जमिला,नेचरोपैथिस्ट,माउण्ट आबू। साथ हैं तीन डिप्युटी कमांडेंट्स नीलम भुटयाल, अनिल शेखावत, राजिन्दर पॉल व ब्र.कु. ममता।

फगवाड़ा-पंजाब। लवली प्रोफेशनल यूनिवर्सिटी की चांसलर रश्मि मित्तल को राखी बांधने के बाद ईश्वरीय सौगात देते हुए ब्र.कु. सुमन।

गोपालगंज-बिहार। आध्यात्मिक चित्र प्रदर्शनी एवं निःशुल्क चिकित्सा शिविर कार्यक्रम में डॉक्टरों की टीम के साथ ईश्वरीय स्मृति में ब्र.कु. अंगूर बहन, कॉपरेटिव बैंक के अधिकारी, गणेश भाई व अन्य।

मोहम्मदी-उ.प्र.। बाल व्यक्तित्व विकास शिविर के पश्चात् समूह चित्र में ब्र.कु. अनुराधा, प्रतिभागी बच्चे व अन्य।

दीपावली पर्व का रहस्य

दीपावली आई दीप जलाओ
परमपिता से मिलन मनाओ
संगम के इस पावन युग में
ज्ञान से आत्म-ज्योति जगाओ।

बड़े आश्चर्य की बात है कि दीपावली का त्योहार भारतवर्ष में बहुत ही महत्वपूर्ण माना जाता है। इसे हम सभी भारतवासी हर वर्ष बड़ी ही धूमधाम से मनाते आये हैं। लेकिन बजाय सम्पन्न होने के और ही कंगाल होते आये हैं। अतः परमपिता परमात्मा अब कहते हैं कि बच्चों, घरों की सफाई करना या दीपक आदि जलाना तो साधारण-सी बात है। परन्तु कलियुग के अंत और सतयुग के आदि के बीच के वर्तमान कल्याणकारी पुरुषोत्तम संगम युग पर दीपावली का वास्तविक रहस्य है कि हे बच्चों! यदि वास्तविक लक्ष्मी को बुलाना चाहते हो या श्री लक्ष्मी श्री नारायण के राज्य की स्थापना करना चाहते हो तो तुम्हें श्री लक्ष्मी के समान दैवी गुण अपने जीवन में धारण करने होंगे। जब तक तुम बच्चे अपने आत्मा रूपी घरों से इन 5 विकारों रूपी मैल को नहीं निकालते अर्थात् जब तक आत्मा को ज्ञान प्रकाश नहीं मिलता तब तक श्री लक्ष्मी और श्री नारायण का राज्य स्थापन नहीं हो सकता और सही अर्थों में दीपावली नहीं हो सकती है।

सच्ची दीपावली

क्या आपने कभी विचार किया है कि श्री लक्ष्मी के स्वागत के लिए प्रति वर्ष दीपमाला जलाकर भी भारतवर्ष क्यों दरिद्र हो गया है? जगमगाते दीपों को देखकर भी श्री लक्ष्मी क्यों हमसे रूठ गयी हैं? जलते हुए दीप उनको आकृष्ट क्यों नहीं कर पाते? वे कौन-सा दीप जलाना चाहती हैं? वस्तुतः आत्मा ही सच्चा दीपक है। विकारों के वशीभूत हो जाने के कारण आत्मा का प्रकाश आज मलिन हो गया है। मनुष्य की अंतरात्मा तमसाच्छन्न है। ऐसे विकारी मनुष्यों के बीच श्री लक्ष्मी का शुभागमन कैसे हो सकता है? लेकिन कितनी विडम्बना है कि आत्म-दीप प्रज्वलित कर कमल पुष्प सदृश अनासक्त बन कमलासीन श्री लक्ष्मी का आह्वान करने की जगह हम मिट्टी के दीप जलाकर बच्चों का खेल खेलते रहते हैं।

अमावस्या की काली रात्रि की तरह आज चतुर्दिक घोर अज्ञान अंधकार छाया हुआ है। कहीं कुछ सूझ नहीं रहा है। मत-मतांतर के जाल में मानव मात्र भ्रमित है। सभी आत्माओं की ज्योति बुझ चुकी है। ऐसे समय में सदा जागती ज्योति निराकार परमपिता परमात्मा शिव सर्वात्माओं की ज्योति जगाने के लिए कल्प पूर्व की भांति इस धराधाम पर अवतरित हो चुके हैं और प्रायः लोक गीता ज्ञान तथा सहज राजयोग की शिक्षा दे रहे हैं। निर्विकारी बन उस सदा जागती ज्योति से अपनी आत्मा का दीपक जगाकर ही हम सच्ची दीपावली मना सकते हैं। तब ही इस देवभूमि भारतवर्ष पर श्री लक्ष्मी-श्री नारायण के दैवी स्वराज्य की पुनर्स्थापना होगी जहां रत्न जड़ित स्वर्ण महल होंगे और घी-दूध की नदियां बहेंगी। इस युगांतकारी घटना की पावन स्मृति में ही हम दीपावली का त्योहार मनाते हैं। इस अवसर पर सदा जागती ज्योति निराकार परमात्मा शिव का प्रतीक एक बड़ा दीप जलाया जाता है और उसी से अन्य दीपकों की ज्योति जलाई जाती है। अन्य किसी देवता के मंदिर में सदा दीप नहीं जलता है, लेकिन आज भी भगवान् विश्वनाथ के मंदिर में अनवरत दीप जलता रहता है क्योंकि एक मात्र निराकार परमात्मा शिव ही सदा जागती ज्योति हैं।

पुराने आसुरी स्वभाव, संस्कार समाप्त

हमारे पुराने आसुरी स्वभाव, संस्कार और सम्बन्ध समाप्त हो जाते हैं तथा नये दैवी स्वभाव, संस्कार और सम्बन्ध बनते हैं। इसी की स्मृति में व्यापारी इस दिन पुराने खाते को बंद कर नया खाता खोलते हैं। अवढ़र दानी, भोलानाथ भगवान शिव के साथ व्यापार करने वाले आध्यात्मिक साधकों का परम कर्त्तव्य है कि अब वे आसुरी अवगुणों का खाता बंद कर दैवी गुणों के लेन-देन का खाता खोलें जिससे आगामी सतयुगी सृष्टि में वे श्री लक्ष्मी का वरण कर सकें।

जुआ खेलने का महत्व

दीपावली के दिन जुआ खेलने का बहुत महत्व है। कहते हैं कि जो इस दिन जुआ नहीं खेलता उसकी अधम-गति होती है। इसका भी गम्भीर आध्यात्मिक रहस्य है। जुए में कुछ सम्पत्ति हम दाँव पर लगाते हैं जो कई गुना होकर हमें मिलती है। पावन सतोप्रधान सतयुगी सृष्टि के स्थापनार्थ जब पतित पावन परमात्मा शिव इस सृष्टि पर अवतरित होते हैं तो वे हम जीवात्माओं को आदेश देते हैं कि अपने कौड़ी तुल्य तन-मन-धन को ईश्वरीय सेवा में लगा दो तो 21 जन्मों के लिए तुमको कंचन काया, सतोप्रधान मन और अखुट धन-सम्पत्ति की प्राप्ति होगी। धन्य हैं वे नर-नारी जो इसकल्याणकारी पुरुषोत्तम संगमयुग पर ऐसा ईश्वरीय जुआ खेलते हैं। बाकी तो सभी `विषय-सागर' में गोता खाने वाले अधम और पशु-तुल्य हैं।

आइये, अब हम प्रतिज्ञा करें कि ईश्वरीय ज्ञान और सहज राजयोग की शिक्षा द्वारा मन-मंदिर की सफाई कर सदा जागती ज्योति निराकार परमात्मा शिव से आत्मा की ज्योति प्रज्वलित करेंगे, आसुरी अवगुणों और संस्कारों का खाता बंद कर दैवी गुण सम्पन्न बनेंगे तथा अपने तन-मन-धन को मानव मात्र के आध्यात्मिक उत्थान में लगा देंगे। फिर तो इस पुण्यभूमि भारतवर्ष पर श्री लक्ष्मी-श्री नारायण के दैवी स्वराज्य की पुनर्स्थापना हो जायेगी। इतना महान अंतर है मिट्टी के जड़ दीप जलाने और चैतन्य आत्मा की ज्योति प्रज्वलित करने में। आत्म ज्ञान का दीप जलायें,

नित्य मनायें प्रभु मिलन।
दिव्य गुणों की दीपावली से
चमक उठे हर घर-आंगन।।

- ब्र.कु. नेहा,मुम्बई

हर वर्ष त्योहार मनाते हुए भी हम जिस बात की कामना रखते हैं कि हमारे घरों में लक्ष्मी आयेगी, जिसलिए हम लोग अपने घरों की सफाई करते, दीपक जलाते तथा पूजन कर लक्ष्मी का आह्वान करते हैं। परन्तु इतना नहीं समझते कि एक तरफ तो लक्ष्मी का वाहन उल्लू को दिखाते हैं और दूसरी तरफ दीपक जलाकर लक्ष्मी का आह्वान करते हैं, परन्तु विचार करने की बात है जब उल्लू को रोशनी में कुछ दिखाई ही नहीं देता तो लक्ष्मी आयेगी कैसे? वह तो हमसे दूर भाग जायेगी।